इंदिरा एकादशी व्रत कथा

सतयुग में इंद्रसेन नाम का एक राजा था, जो महिष्मती नगरी पर राज करता था। उसके पास सभी भौतिक सुख-सुविधाएं थीं। एक दिन नारद मुनि राजा इंद्रसेन के दरबार में उसके मृत पिता का संदेश लेकर पहुंचे। नारद जी ने राजा इंद्रसेन को बताया कि कुछ दिन पहले उनकी मुलाकात राजा के पिता से यमलोक में हुई थी।

नारद जी को राजा के पिता ने बताया कि एक बार उनके जीवन काल में उनसे एकादशी का व्रत भंग हो गया था और इसी वजह से उन्हें अब तक भी मुक्ति नहीं मिली है इसीलिए वे अभी यमलोक में इधर-उधर भटक रहे हैं। यह संदेश सुनकर राजा बहुत दुखी हुए और नारद जी से अपने पिता को मोक्ष दिलाने का उपाय पूछा? उपाय खोजते हुए नारद जी ने बताया कि यदि वे आश्विन मास में पड़ने वाली इंदिरा एकादशी का व्रत रखेंगे तो उनके पिता को सभी प्रकार के पापों से मुक्ति मिलेगी।

साथ ही उन्हें बैकुंठ धाम में स्थान मिलेगा। इसके बाद राजा ने इंदिरा एकादशी का व्रत करने का संकल्प लिया और भगवान विष्णु की विधिवत पूजा की। राजा ने अपने पूर्वजों का श्राद्ध भी किया, ब्राह्मणों को भोजन कराया और अपनी क्षमता के अनुसार उनके नाम पर दान-पुण्य भी किया, जिसके फलस्वरूप राजा के पिता को मोक्ष की प्राप्ति हुई और वे मोक्ष को प्राप्त हुए। इतना ही नहीं, राजा इंद्रसेन को भी मृत्यु के बाद बैकुंठ धाम की प्राप्ति हुई।